अष्टकोसी परिक्रमा

कुरुक्षेत्र ।

लेखक :

माम चन्द सागर शर्मा

गली कटरान थानेसर

(कुरुक्षेत्र)

अष्टकोसी परिक्रमा और महात्म

(कुरुक्षेत्र)

मनुष्य का जीवन सुख भोग शान्ति और मोक्ष प्राप्त प्रयत्नों में ही व्यतीत होता है। भारतीय ऋषियों और मुनियों ने सुख-शान्ति और मोक्ष प्राप्ती का साधन तीर्थ यात्रायें, संत समागम और हरि कथा श्रमर्ण करने में ही बतलाया है। इसी संदर्भ में कुरूक्षेत्र की पावन भूमि का महत्व और अष्टकोसी यात्रा का फल व बिवर्ण मैंने कई ग्रन्थों के अवलोकन और पूज्य संत कुमार जी कौशिक गुदड़ी वाले की सहायता से अपने शब्दों में लिपिबद्ध किया है। समस्त यात्रा विवर्ण पुरान ग्रन्थों और दन्त कथाओं के आधार पर निर्मित है क्योंकि मैं कोई लेखक या इतिहासकार नही हूं परन्तु फिर भी मैंने अष्टकोसी भूमि के गौरव को जनता के सम्मुख रखने का प्रयत्न किया है सो त्रुटियों और असंगतियों को क्षमा कर कृतार्थ करेंगे।

कुरुक्षेत्र की पावन भूमि को सरस्वती जी व अन्य कई सरिताओं ने पवित्र ही नहीं बनाया है अपितु सुख शान्ति और मोक्ष को त्रिधा के रूप में संसार के समक्ष अर्पण कर दिया है। इस त्रिधारा शक्ति को आदिकाल से ही देवो-ऋषियों-मुनियों और महान पुरुषों ने नेत्र प्रयन्त-पूर्वक तीर्थारन कर अपने अन्दर समाहित कर अनंत फल प्राप्त किया है मनुष्य जीवन कर्म क्षेत्र है जिसमें दुख और सुख सदेव ही निरन्तर साथ-साथ पथगामी होते हैं। भगवान ने मनुष्य को जन्म देकर मायारुपी संसार में स्वछन्द कार्य करने के लिए छोड़ दिया है। इसी कारण वेदों और शास्त्रों ने कर्मानुसार फल भोगने की बाबत बतलाया हैं। सुख और शान्ति व मोक्ष की तालाश में मानव भटकता फिर रहा हैं इस भटकावे को समाप्त करने का केवल मात्र साधन तीर्थ यात्रायें-संत समागम और हरि कथा ही है।

क्योंकि कुरुक्षेत्र की भूमि त्रिधाशक्ति युक्त है सो इस की यात्रा करने से नाना प्रकार के फल प्राप्त होते हैं वामन पुराण का मत है कि

गंगा जले मुक्ति-वारणस्यां जले थले
कुरुक्षेत्रे त्रिधा मुक्ति अंतरिक्षे जले थले"

अर्थात कुरुक्षेत्र स्नान व वास करने के उपरान्त तीन प्रकार से मुक्ति प्राप्त होती है जबकि कांसी जी में जल और थल पर ही मुक्ति हो सकती है और हरिद्वार में केवल गगा के जल में मुक्ति है और पुराणों में आगे भी कहा है

"गत्वा ही श्रद्वया युक्ता कुरुक्षेत्रे कुरुद्वह ।
फलं प्राप्नोति च तदा राजसूयाश्व मेध्यो: ।।

अर्थात कुरुद्वारा सेवित कुरुक्षेत्र भूमि अष्टकोसी यात्रा श्रद्धापूर्वक करने से राजसूय यज्ञ और अश्वमेध्य यज्ञ का फल प्राप्त होता है। सो धार्मिक जनता को चैत्र कृशन चतुदर्शी के दिन यात्रा लाभ उठाकर जीवन सफल बनाना चाहिये ।

यह गुटिका मैं अपने परम श्रदये स्वर्गीय पितामह रामनाथ जी रामायणी और पूज्य पिता श्री जैमगवान जी गीतापाठी के चरण कमलों में सादर समर्पित करता हूं ।

राम चन्द सागर शर्मा
स्थाणेश्वर ।

अष्टकोसी कुरुक्षेत्र परिक्रमा और महात्मय

कुरूक्षेत्र का पवित्र शब्द अपने आप में एक पर्व-संस्कृति और मोक्ष दायक धार्मिक व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। इस धरती का कण कण वीर रक्त से रंजित ही नही अपितु युग पुरुष भगवान श्री कृष्ण के मुखारविन्द से प्रकट हुआ अमृत रुपी गीता संदेश पवित्र पावनी सरस्वती का सहयोग प्राप्त कर अवरिलधार से बह रहा है और संसार को वेदोमृत का रसास्वादन करा रहा है। इसी स्थान पर ऋषियों और मुनियों ने वेद ग्रच्चाओं का निर्माण कर संसार को ज्ञान प्रदान किया है।

कुरुक्षेत्र त्रिदेवों का संगम स्थान ही नहीं अपितु कुरूनरेश का अष्टांग यज्ञ "तप-सत्य-क्षमा-दया-शौच-दान-योग-ब्रह्मचार्य" से परिपूर्ण मोक्ष प्रदायक धार्मिक स्थान है। इस स्थान की स्थापना स्वयं जगत नियंता भगवान नारायण ने की है और इस प्रदेश की रक्षा व्यवस्था का परिभार शंकर भगवान के अधीन किया है। महादेव जी इसी स्थान पर सिहासनारूढ़ हो कर संसारी और दैवी समस्याओं का समाधान और परित्राण करते हैं कुरूक्षेत्र की सीमा निर्धारणा वैसे तो 48 कोस के अर्न्तगत मानी जाती है और धार्मिक लोग इस पुण्य क्षेत्र में निर्मित व स्थापित पवित्र स्थलों की यात्रा और मोक्ष प्रदायक सरोवरों में स्नान कर देव ऋण पितृ ऋण से मुक्त हो कर अक्षय फल प्राप्त गामी होते हैं परन्तु कुरुक्षेत्र की 48 कोस की भूमि के मध्य में अष्टकोसी भूमि अति वशिष्ठ ही नहीं अपितु अतिश: शीघ्र मन वाँछित फल प्रदायक है। कहते हैं कि चैत्र नदी चतुदर्शी को सर्वप्रथम ब्रह्मा बिष्णु महेश त्रिदेवों ने उपवास रख जन नियतां भगवान से सृष्टि का श्रीगणेश करने के लिए पतित पावनी अष्टकोसी भूमि की परिक्रमा की ओर अपने अपने देवत्वभार को ग्रहण कर सृष्टि संयोजन का कार्य प्रारम्भ किया था। त्रिदेवों के पश्चात सदैव ही प्रतिवर्ष देवताओं और धार्मिक मनुष्यो ने अष्ट कोशी भूमि की यात्रा कर मन वांछित फल प्राप्त कर मोक्ष के भागी बनते आ रहे हैं। अष्टकोसी यात्रा करने के बारे यह कहावत है कि यदि कोई मनुष्य एक बार कुरुक्षेत्र अष्टकोसी

यात्रा का लाभ उठाता है वह मनोकामना प्राप्त करता है दो बार अष्ट कोसी यात्रा विधिवत करने से स्वर्ग लोक प्राप्त होता है और यदि कोई तीन बारपाँच बार विधिवत श्रद्धा भक्ति युक्त होकर अष्टकोसी यात्रा करता है वह अक्षय लोकों की प्राप्ति का भागी बनता है।

अष्टकोसी यात्रा करते समय जिन जिन तीर्थ स्थलों और पुण्य सरोवरों में स्नान-दान दर्शन अर्चन किया जाता है वह नीचे लिखेनुसार है।

चैत कृशणा चतुदर्शी तिथि को ब्रह्ममूर्त में नाभीकमल तीर्थ स्थान में स्नान ध्यान करना चाहिये और यात्रा की सफलता के लिए ब्रह्मा जी से प्रार्थना करनी चाहिए। नाभीकमल तीर्थ ब्रह्मा जी का जन्म स्थान है इस तीर्थ से चलकर औजस तीर्थ पर पहुंच कर स्नान दान करना चाहिये इस स्थान पर नारियल व पैसे आदि के दान की महिमा है। औजस स्थान देव सेना पति स्वामी कार्तिकेय जी के औजस्वी प्राक्रम से उदघोषित ही नही हो रहा है परन्तु संसार में एक अदभुत पितृ भक्ति की गाथा का गौरव स्थान है। कहा जाता है कि भगवान शंकर जी के दो पुत्र स्वामी कार्तिकेय और गणेश जी थे। शकर जी ने गणाध्यक्ष के पद प्रदान के लिए यह शर्त रखी कि जो पुत्र सारी पृथ्वी की परिक्रमा कर के सर्व प्रथम आयेगा उसे ही उपरोक्त गणाध्यक्ष पद पर आसीन किया जायेगा। कार्तिकेय जी अपने शीघ्रगामी वाहन मोर पर सवार हो कर पृथ्वी परिक्रमा यात्रा पर निकल पड़े। उधर गणेश जी ने अपनी समस्या माता पार्वती के सम्मुख रखी कि मातेश्वरी मैं स्थूल शरीर और फिर मेरा मन्दगति वाहन मूसक है सो इस सूरत में मैं किस प्रकार सारी पृथ्वी की परिक्रमा कर सर्व प्रथम आ सकता हूं सो हे माता मेरी सहायता कर कृतार्थ करें। पारवती जी ने सोच विचार कर गणेश जी को समझाया कि तेरे पिता समस्त पृथ्वी के अधिपति हैं इन की विधि पूर्वक चहूं ओर से परिक्रम कर लो सो समस्त पृथ्वी की परिक्रमा समझो।

यह सम्मति मानकर गणेश जी ने महादेव जी की चहूं ओर से परिक्रमा कर नमस्कार अभिवादन किया और शंकर जी के सम्मुख जा कर खडे हो गये और शान्त स्वर में कहा पृथ्वी पति पिता श्री जी मैंने समस्त पृथ्वी की भली भाँति परिक्रमा कर ली है अब और आज्ञा कीजिये

यह चतुर्तापूर्ण कार्य देख शंकर भगवान अति प्रसन्न हुए और समस्त देव समुदाय के समक्ष गणेश जी को गणनायक पद पर आसीन कर दिया और यह वर दिया कि आज से सभी धार्मिक व शुभकार्य सर्वप्रथम गणेश पूजन से ही सफल माने जायेंगे। कई दिन पश्चात वीर कार्तिकेय अपने मयूर वाहन पर समस्त पृथ्वी की परिक्रमा कर देव सभा में पहुंचे और देखा कि गणाध्यक्ष पद पर कनिष्ट भ्राता गणेश जी को आसीन कर दिया है तो बड़े क्रोधित हुए और यह पता लगाया कि किस प्रकार गणेश जी को गणनायक पद दिलवाया गया है सब हाल जानकर कार्तिकेय जी अपनी माता पारवती जी पर अति क्रोधित हुऐ और कहा कि माता होकर पुत्रों में भेदभाव किया यह कहकर अपने समस्त शरीर को धर्म उतारकर पारवती जी के सम्मुख प्रस्तुत की और कहा माता जी आप से निर्मित मेरे शरीर में केवल चर्म ही आप की थी पो इसे वापस स्वीकार करें। यह औजस रूप देखकर सभी देव समुदाय और शंकर जी बड़े विसमित हुऐ। शंकर भगवान ने अपने पुत्र कार्तिकेय की भूरी भूरि प्रशंसा की और वरदान दिया कि आज से तुम्हारा शरीर बिना चर्म के ही स्वस्थ रहेगा और जो प्राणी आप की मूर्ति पर सिंदूर और तन अर्पण करेगा वह स्वास्थ्य और मन इच्छा फल प्राप्त करेगा। इसके पश्चात शंकर जी ने कार्तिकेय जी को शमशान का राजा नियुक्त कर दिया।

चैत्र कृशणा चतुदर्शी के दिन प्रतिवर्ष कार्तिकेय जी अपनी गदा घुमाकर अष्टकोसी पृथ्वी की रक्षा करते है जो प्राणी चैत्र कृशणा चतुर्थी के दिन इस गदा के अन्तगत आता है वह मोक्ष गामी होता है।

पवित्र औजस तीर्थ से चलकर सरस्वती जी के किनारे किनारे चलते हूऐ कुरुक्षेत्र के स्वामी स्थानेश्वर महादेव जी के अति पुण्यमय तीर्थ स्थल और देव मन्दिर में पहुंचना चाहिये। स्थाणेश्वर तीर्थ और मन्दिर की स्थापना स्वय भगवान शकर जी ने ही अपने विग्रह रुप में की है। सरोवर के मध्य में एक कूप रुद्रकूप के नाम से विद्यमान है इसी कूप का अमृत जल सरोवर को पवित्रतम ही नही बनाता अपितु पतित-पावनी सरस्वती आदि गगां गुप्त रुप से सरोवर के जल में सवस्वती जल का सम्मिश्रण कर इसे अक्षय फलदायक बनाती है। कुरुक्षेत्र की यात्रा भगवान स्थाणेश्वर देवालय के दर्शन और सरोवर स्नान बिना सफल

नही मानी जाती है। इस स्थान पर सम्पती सहित ब्राह्मण भोजन और नाना प्रकार का दान किया जाता है मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

स्थाणेश्वर महादेव से सरस्वती किनारे पूर्व की ओर चलकर कुबेर भण्डार तीर्थ स्थान आता है। पूर्वकाल में कुबेर जी ने इस स्थान पर तप कर दिकपाल धनाध्यक्ष के पद की प्राप्ती की थी। चैतन्य महाप्रभु जी ने भी इस स्थान पर माता सरस्वती की अराधना और कुबेर जी की अर्चना की थी आज भी महाप्रभु जी एक बैठक विद्यमान है जिसमें निरन्तर पूजा अर्चना की जा रही हैं। इस स्थान पर निर्धन लोगों को कुबेर जी से धन प्रदान की याचना करके सफल मनोरथ होना चाहिये और अन्य सभी को सुख भोगों के लिये सफल जीवन की कामना करनी चाहिये।

कुबेर भण्डार से पूर्व दिशा में सरस्वती के किनारे किनारे चलकर रेलवे लाईन पुल के नीचे माता सरस्वती का जल क्षीर सगार जल समान हो जाता है। क्षीर ससार जल में स्नान करना बड़े भाग्यवानों को ही प्राप्त होता है। सरस्वती जी ने मनुष्य मात्र के घोर कष्टों और सकटों के निवार्णार्थ ही इस स्थान पर अपने जल को क्षीर समान बना लिया है। यात्री गणों यहां स्नान ध्यान कर दूध चावल श्वेत वस्त्र श्वेत चंदन मोती चांदी आदि का दान कर सफल मनोरथ होना चाहिये

क्षीर सागर तीर्थ के पश्चात सरस्दती किनारे ही ऋषि दधाची ने दधीची कुण्ड का निर्माण किया था। सरस्वती जी निरन्तर बाह्य ओर गुप्त रुप में इस कुण्ड में प्रवाहित होती रहती हैं। इस स्थान पर पंच रतनों स्वर्ण-वस्त्र-आभूषणों के दान की बड़ी महिमा बताई जाती है।

दधीची कुण्ड से सरस्वती के किनारे पूर्व दिशा मे प्रजापति ब्रह्मा जी ने कुरुक्षेत्र की रक्षार्थ रतन नाभी प्रथम यज्ञ को नियुक्त किया था। रतन यक्ष जी आज भी बड़ी तनमयता से अपने कार्य का सम्पादन कर रहे हैं। दूसरे इसी स्थान पर पूर्व काल में एक ब्राह्मण कन्या ने वृद्ध अवस्था तक जप तप कर शरीर त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया था। इसी कारण इस स्थान को ब्रहदकन्या रतन यक्ष के नाम से जाना जाता है। यहां पर यात्री ध्यान कर गौदान स्वर्णदान व वस्त्र दान आदि कई प्रकार का दान अपनी मनोकामनाये पूरी करते हैं। यात्री गण रतन यक्ष जी के

मन्दिर में अपनी यात्रा की उपस्थिति नाम लिखकर करते हैं। रतनयक्ष वृहद कन्या से चलकर रतगल ग्राम से आगे चौतग नदी और चन्द्रभागा वैतरणी नदी को पार कर के दीप प्रजवलित किये जाते हैं और यात्री गण अपने सर्व कुटुम्ब और जान पहचान वाले व्यक्तियों के नाम ले लेकर पैसा या अन्य मुद्रा दान करते हैं। ऐसी दंत कथा है कि यदि पृथ्वीलोक में ही चन्द्रभागा वेतरणी नदी को ही श्रद्धा पूर्वक भगवद् भजन करके पार कर लिया जाये तो मृत्युउपरांत वैतरणी नदी पार करते समय प्राणी को कोई कष्ट नही होता हैं। यहां पर गज कैंची आदि का दान विशेष महत्व रखता है।

चन्द्रभागा वैतरणी नदी को पार करके विश्राम घाट आता है। इस स्थान पर यात्रीगण अपनी संख्या की गिनती करवाते हैं। संख्या गिनती करवाते समय कुछ मुद्रा अवश्य दी जाती हैं क्योंकि खाली हाथ गणना करवाना ठीक नहीं होता है। विश्राम घाट के पश्चात आघटिया नामक बड़ा प्रसिद्ध चमत्कारी स्थान आता है यहां पर साधू संतो ने ओघड़ रह कर बड़ी बड़ी सिद्धिया प्राप्त की थी यात्री गण इस स्थान को नमस्कार प्रस्थान करते हैं।

औघटिया तीर्थ स्थान से चलकर बाण गगां दयालपुर ग्राम आता है। बाण गगां तीर्थ में गगां जी का गुप्तवास कहा जाता है अर्जुन ने महाभारत युद्ध के समय अक्षयरथ के दिव्य घोड़ों के विश्राम और जलपान कराने के लिए भूमि में तीर मारकर गगां जी प्रकट की थी और इस जल को दिव्य घोड़ों ने पान किया था। घोड़ों के जलपान और विश्राम के समय तीरों की वर्षा कर चहुं ओर परकोर बना दिया थ। इस स्थान पर यात्री स्नान कर कुछ विश्राम और जलपान करते हैं।

बाण गगां दयालपुर ग्राम से आगे चलकर अपगा या उपगया नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान आता है इस स्थान से चन्द्रभागा वेतरणी नदी टयोठा ग्राम की ओर गई है। उपगया में पितृ ऋण से मुक्ति के लिये पिण्ड दान जलाजली देने का बिधान है। इस स्थान पर पित्रों के मोक्ष हेतू पिण्ड दान जलांजली दान दक्षिणा सहित की जाती है। श्रय्यादान वस्त्र भूषण दान-यज्ञ हवन करने से अक्षय लोक की प्राप्ती होती है। इस स्थान पर सामयक चावलों से और घृत मिलित यज्ञ से यदि ब्राह्मण

भोजन कराया जाये तो पित्र तृप्त होकर मनोकामनायें पूर्ण करते हैं।

उपगया तीर्थ की विधिपूर्वक यात्रा करके मृत्युजंय पुर ग्राम से हो कर नरकउतारी बाण गगाँ भीषम कुण्ड के पावन तीर्थ पर पहुंच कर तीर्थ में स्नान ध्यान करना चाहिये। यहां की यात्रा से महान नारकीय जीव भी पाप मुक्त हो सकता है। अष्टकोसी क्षेत्र महाभारतयुद्ध में भी युद्ध से विमुक्त क्षेत्र था इसी कारण भीषम पितामह जी अपना मृत्यु स्थान चुना था। अर्जुन ने भीषम जी की पिपासा बुझाने के लिये भूमि में तीर मारकर गगां जी प्रकट किया था और गगां नन्दन भीषम जी ने पवित्र जलपान किया था। भीष्म पितामह जी ६ मास तक उतरायण पक्ष आने तक इसी स्थान पर बाण शय्या पर पड़े रहे और उतरायण पक्ष आने पर मोक्ष गति प्राप्त की थी। भीषम जी ने इस स्थान को महान पुण्यदायक-मोक्षप्रदायक–जन्म जन्मान्तों के पापों और घोर नरकों से उद्धारक स्थान बनाने की याचना भगवान श्री कृष्ण जीं से की थी। जिसे उन्हो तथास्तु कहकर नरकउतारी और सर्व प्रकार से पाप विमोचन बनाया है इस स्थान पर जलदान, अन्नदान, भोजन दान, पिण्ड दान और अन्य कई प्रकार के दान किये जाते हैं जिस से मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। मनुष्य पाप विमुक्त होकर अक्षय फल को प्राप्त कर लेता है

नरकातारी भीषम कुण बाण गगां की विधिवत यात्रा कर यात्री गणों को औजस तीर्थ पहुंच कर स्नान ध्यान कर नाभी कमल तीर्थ पर पर पहुंचना चाहिये यहां पर ब्रह्मा जी से अपनी यात्रा की सफलता पूर्वक समाप्ती के लिये आर्शीवाद प्राप्त करना चाहिये। सध्या वंदन आरती करके अपने अपने घरों को प्रस्थान करना चाहिये। यात्रा की समाप्ती हर ब्राह्मण भोजन और श्रद्धा समान दान दक्षिणा समर्पित करनी चाहिये।

लेखक :

राम चन्द सागर शर्मा

थानेसर।

दिनांक 15 मार्च 1988

8 KOSI PARIKRAMA ROUTE MAP

VISION KURUKSHETRA

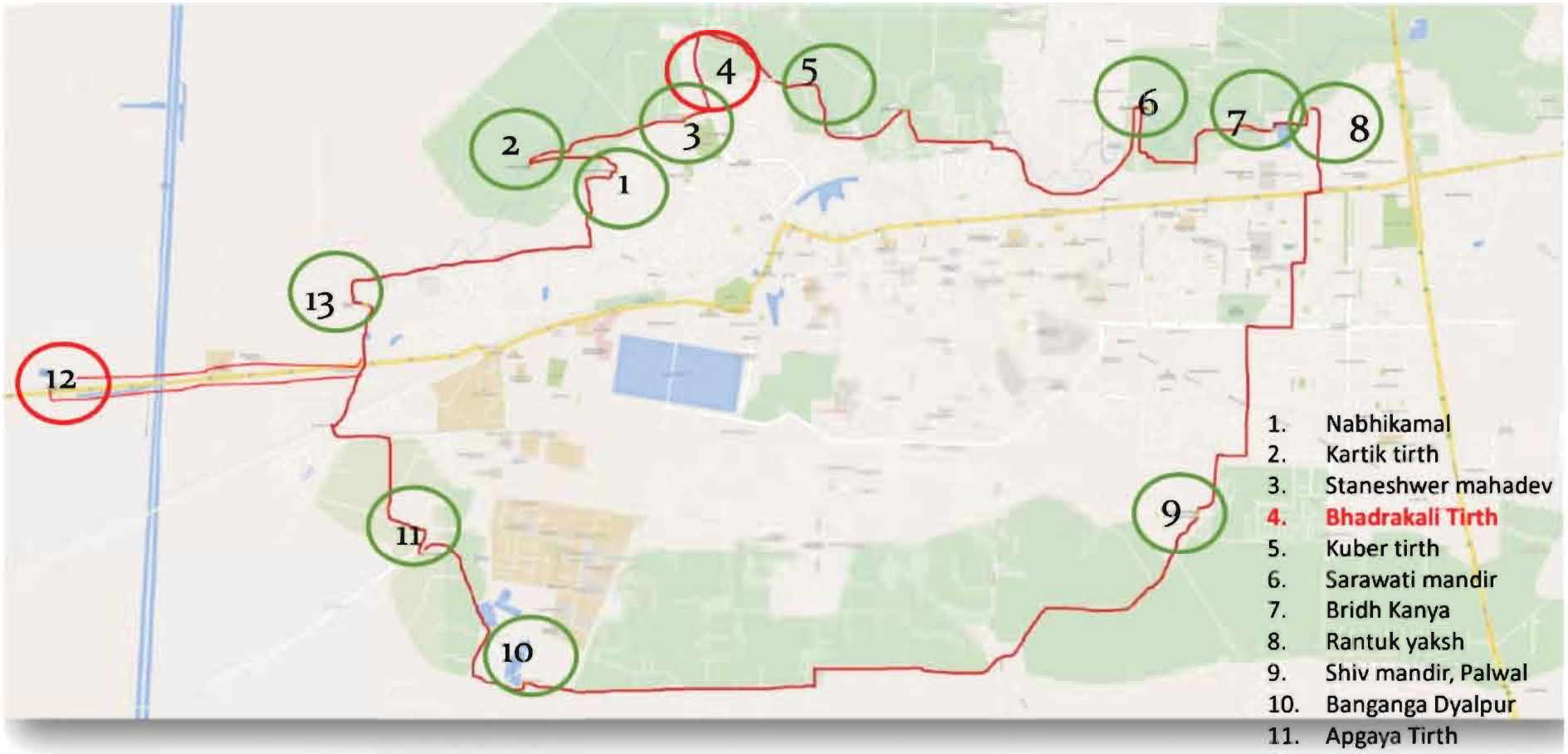

•Red marked Tirths are added as per discussion (were not in basic list)